प्रतिज्ञा से परीक्षा पर विजय

- राजयोगी ब्र.कु.सूर्य,माउण्ट आबू

'सम्पूर्ण पवित्र आत्माएं चाहे थोड़ी ही हों,' सूर्य तुल्य हैं। उनकी पवित्रता विश्व का आधार है, उनका एक-एक संकल्प अनेक आत्माओं को बल प्रदान करता है। वे सृष्टि की सुंदरता हैं, उनकी मात्र उपस्थिति ही अनेक आत्माओं को सुख चैन की अनुभूति कराती है।

कलियुग की गंदगी से निकलकर सम्पूर्ण पवित्रता की प्रतिज्ञा करने वाली शक्तिशाली आत्माओं पर भाग्य विधाता को भी गर्व है। ऐसी कई लाख आत्माएं सम्पूर्ण पवित्रता का व्रत ले चुकी हैं, अब इस वसुंधरा पर पवित्रता की सरिता बह चली है और उसके प्रवाह में अनेक मनुष्य पवित्रता का व्रत लेंगे।

प्रतिज्ञा कर लेना तो सहज है परंतु हर कीमत पर उसे निभाना खेल नहीं। प्रतिज्ञा चाहे छोटी हो या बड़ी, उसे परीक्षाएं तो सहन करना है।

हमें स्वयं से एक प्रश्न पूछना है कि, परिस्थितियां शक्तिशाली हैं या हम? अवश्य ही उत्तर मिलेगा-'हम', क्योंकि हमारे साथ सर्व समर्थ है। परिस्थितियाँ तो निर्बल हैं क्योंकि वे निर्बल मन की रचना हैं। यह स्मृति व नशा कि हम शक्तिशाली हैं, हमें परिस्थितियों पर विजयी बनाएगा-इस रहस्य को ठीक तरह से जान लेना चाहिए।

जब हम स्वयं को कमज़ोर समझते हैं तो हमारी कमज़ोरी के वायब्रेशन्स परिस्थिति को शक्तिशाली बना देते हैं और जब हम स्वयं को शक्तिशाली, शिव शक्ति या मास्टर सर्वशक्तिवान समझते हैं तो हमारे शक्तिशाली वायब्रेशन्स परिस्थितियों को निर्बल बना देते हैं। इस प्रकार स्मृति ही हमारी जीत या हार का कारण बनती है।

अवश्य ही देनी होती है। वास्तव में परीक्षा की अग्नि से गुज़र कर ही प्रतिज्ञा शक्तिशाली बनती है। वे मनुष्य जो किसी भी कारण वश या परिस्थिति वश अपनी प्रतिज्ञा से नहीं हिलते, महान् बन जाते हैं। परीक्षाएं तो आनी ही हैं और आनी ही चाहिए परंतु अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहना-यही योगी जीवन की शोभा है।

प्रतिज्ञा की है भगवान के सम्मुख

हमने प्रतिज्ञा भावुकता वश भी नहीं की। हमने प्रतिज्ञा सोच-समझकर की है। सर्वशक्तिवान के सम्मुख प्रतिज्ञा करते ही उसने हमारी प्रतिज्ञा में बल भर दिया है। यह कहना सत्य होगा कि, जैसे ही हमने प्रतिज्ञा की, हम शक्तिशाली बन गए।

हमने प्रतिज्ञा एक महान लक्ष्य को पाने के लिए की है। हमारी प्रतिज्ञा माया के विरूद्ध है, इसलिए हमें कदम-कदम पर परीक्षा देने के लिए तैयार रहना चाहिए। माया के विरूद्ध युद्ध का ऐलान करके हमने परीक्षाओं का आह्वान कर लिया है, उसे चुनौती देकर हमने उसे शक्तिशाली भी बना दिया है, इसलिए उसके वार को, खुशी से

सत्य की शक्ति पर विश्वास

जब कोई मनुष्य सत्य के मार्ग पर चलता है तो कलियुगी विश्व परीक्षाओं के जंजाल बुनने लगता है। लोग कहते हैं- सत्य का पथ कांटों भरा है, सत्य कठोर है। ये भी सर्वमान्य सत्य है कि सत्य की विजय अवश्य ही होती है परंतु जब सत्य हारता नज़र आता है और पाप प्रभावी होता प्रतीत होता है तब सत्य की प्रतिज्ञा करने वाले राही के कदम कभी-कभी डगमगाने लगते हैं।

'सत्य की शक्ति' में स्थित मनुष्य को सत्य की विजय पर विश्वास रहता है परंतु वो मनुष्य जिसके पास सत्य तो है परंतु सत्य की शक्ति नहीं है, सत्य की विजय में होते विलम्ब को देख निराश होने लगता है और फलत: सत्य में विश्वास खो देता है, वह कहने लगता है, यहां तो 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' है, यहां तो रिश्वत की विजय है, यहां तो भ्रष्टाचार विजयी है। यहां बहुत पक्षपात है, यहाँ हमारी सुनता ही कौन है?

परंतु जिसके पास सत्य की शक्ति है, उसकी आवाज़ तो परम सत्य परमात्मा तक जाती है। मान लो पाप विजयी हो भी जाए परंतु उसकी यह विजय क्षणभंगुर होगी और सत्य की हार भी जल्दी ही जीत में बदल जाएगी। सत्य के पास पुण्य का बल होगा और असत्य का पाप मनुष्य को स्वत: ही खा जाएगा। इस सत्य को जानकर, कभी स्वयं को विचलित नहीं करना चाहिए।

सिर्फ प्रतिज्ञा नहीं, दृढ़ प्रतिज्ञा

'प्रतिज्ञा में बल है', परीक्षाएं निर्बल हैं। हमारी प्रतिज्ञा दृढ़ हो। केवल प्रतिज्ञा नहीं, दृढ़ प्रतिज्ञा हो। हमने प्रतिज्ञा की हो कि हम मर मिट जाएंगे, परंतु प्रतिज्ञा से नहीं हटेंगे। प्राण जाए पर वचन न जाए। भगवान् को वचन देकर हम वापिस नहीं लेंगे। ऐसी प्रतिज्ञा में असीम बल है। ऐसी प्रतिज्ञा के समक्ष माया या परीक्षाओं का कोई अस्तित्व नहीं। ऐसी प्रतिज्ञा ही मनुष्य को परिपक्व करती है।

पवित्रता के मार्ग पर प्रत्येक मनुष्य के सामने कई परीक्षाएं आती हैं। कभी तो मनुष्य के आगे भयंकर भूत बनकर आ जाते हैं और मनुष्य प्रतिज्ञा को भंग कर देता है। ऐसी प्रतिज्ञा निर्बल कहलाती है।

परंतु धीर-वीर प्रतिज्ञा केवल एक ही बार करते हैं, न वे अपनी प्रतिज्ञा तोड़ते न उसे कमज़ोर करते। एक बार प्रतिज्ञा कर ली, बस वही जीवन है, उससे पीछे मुड़कर नहीं देखना है। ऐसी प्रतिज्ञा मनुष्य को सफलता के चरम बिन्दु पर पहुंचा देती है। ऐसी प्रतिज्ञा स्वयं ही एक बल है जो प्रतिज्ञा करने वाले को भी बलवान बना देती है।

कुमार, कुमारियों के सामने तरह तरह की परीक्षायें आती हैं। परिवार व समाज उन्हें तरह-तरह के कष्ट भी देते हैं व धमकियाँ भी। कहीं-कहीं लोभ भी देते हैं और कहीं-कहीं उनके मन में ये डर भी पैदा करते हैं कि तुम अकेले ही जीवन की लम्बी यात्रा कैसे तय करोगे? उन्हें क्या पता इनकी जीवन यात्रा में स्वयं भगवान् साथ चल रहा है।

जो दृढ़ हैं वे भगवान् की ही सुनते हैं, अन्य किसी की नहीं और जो निर्बल हैं, काम के वेग को रोकने में असफल हैं, वे परिवार को खुश करने का बहाना करते हैं। वे कहते हैं मेरी माँ रोती है। वे भूल जाते हैं कि अपवित्र बनने से तुम्हारा जन्म-जन्म का भाग्य रोया करेगा।

तो एक ओर परिस्थितियाँ...दूसरी ओर योगी...कौन प्रबल होता है इस युद्ध में? जो विजयी बने उसकी जय-जयकार और जो हारे वह जन्म-जन्म हाय-हाय करे। तो हमें अपनी प्रतिज्ञा को निर्बल नहीं करना है। प्रतिज्ञा को कमज़ोर करता है 'मैं-पन'। मैं निर्बल हूँ, मैं क्या करूं, मैं कहां जाऊं, मुझे कोई साथ नहीं देता-ये मैं-पन हमारी प्रतिज्ञा को कमज़ोर करते हैं परंतु जिनके साथ सर्व शक्तिवान है, उन्हें कोई हरा नहीं सकता, जो सर्व-समर्थ से कम्बाइंड हैं, उनकी विजय निश्चित है। इसी निश्चय व नशे से निर्भय होकर सत्यता के मार्ग पर चलो तो सभी परिस्थितियाँ हार मानकर पीछे हट जाएंगी।

मलेशिया। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में भारतीय दूतावास के हाई कमिश्नर त्रिमूर्ति जी, दातो आर.लेचुमनन तथा ब्र.कु.मीरा।

मास्को (रशिया)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रम भारतीय दूतावास के प्रथम सचिव सिद्धार्थ शाशिनी, द्वितीय सचिव शाश्वती डे की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

नई दिल्ली। जे.एन.यू. युनिवर्सिटी में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में वाइस चांसलर एम. जगदीश कुमार, डीन प्रो.उमेश कदम, ब्र.कु.शुक्ला, ब्र.कु. अनुसुइया, ब्र.कु.नेहा तथा अन्य।

सहारनपुर-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर शाकुम्भरी रोड बेहट में आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए प्रमुख व्यापारी ओम चुग, राजीव कर्णवाल तथा बद्रीप्रसाद अरोरा, ब्र.कु. सूर्यप्रकाश, वरिष्ठ समाजसेवी हुकमचंद गर्ग, ब्र.कु. रानी, ब्र.कु. उमा, उद्योगपति अर्चना अग्रवाल तथा सत्यपाल चौहान।

सम्बलपुर-ओडिशा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम में शहर के भाई बहनों को आसन व प्राणायाम कराते हुए राधामाधव बोहिदर,योगा इंस्ट्रक्टर,पतंजलि योग समिति तथा ब्र.कु. भाई बहनें।

गया-बिहार। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर गांधी मैदान में आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.सुनीता। साथ हैं डॉ.मुरलीधर, जमुना भाई, लल्लन भाई व अजय भाई। योगाभ्यास करते हुए प्रतिभागी।